धूप खिली है हवा चली है

बाल कविताओं का संग्रह

प्रयाग शुक्ल
कलाः तापोसी घोषाल

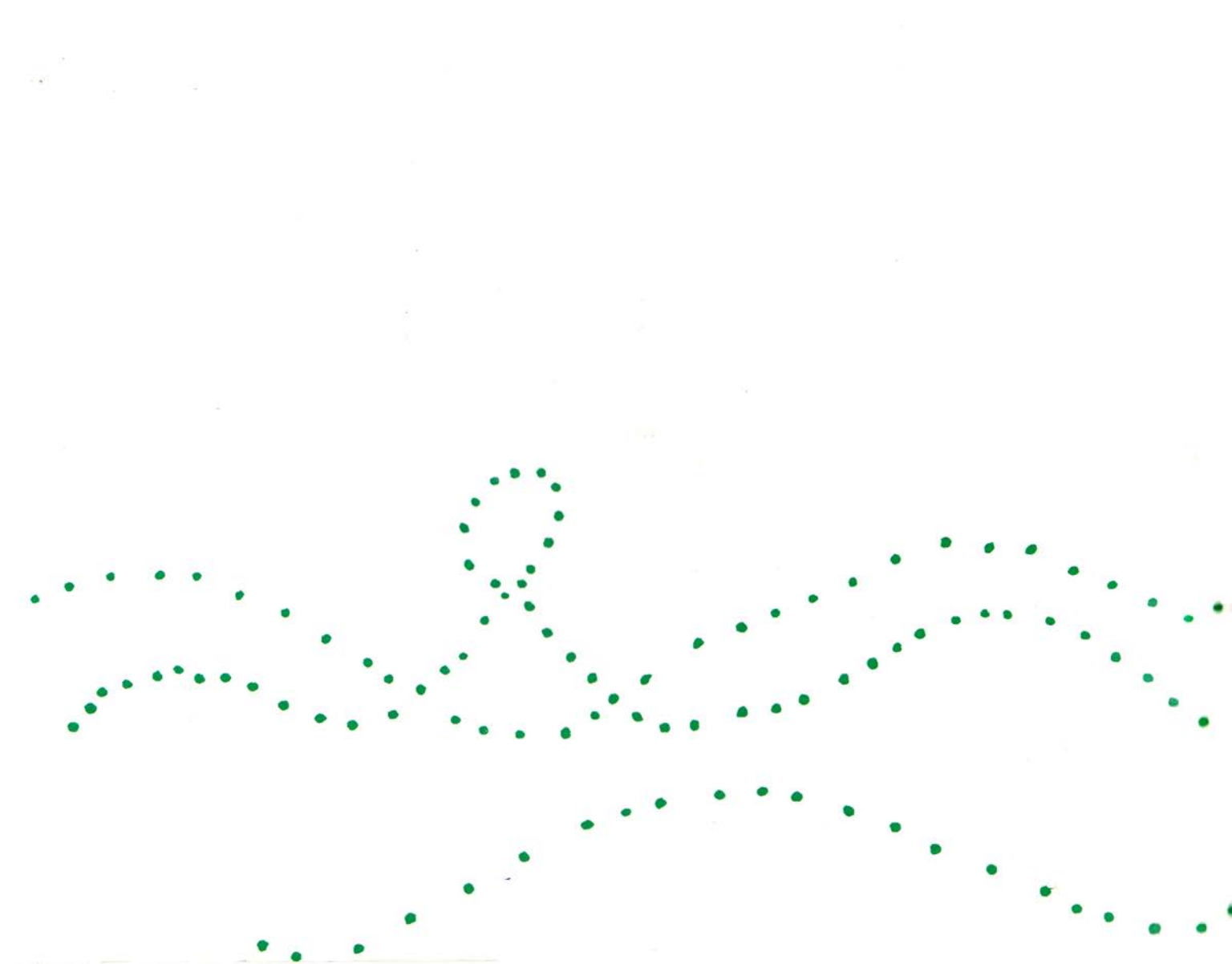

धूप खिली है
हवा चली है

बाल कविताओं का संग्रह

प्रयाग शुक्ल
कलाः तापोसी घोषाल

एकलव्य का प्रकाशन

धूप खिली है हवा चली है

Dhoop Khili hai Hawa Chali Hai

प्रयाग शुक्ल

कलाः तापोसी घोषाल

© प्रयाग शुक्ल एवं एकलव्य / सितम्बर 2009 / 5000 प्रतियाँ
पहला पुनर्मुद्रण फरवरी 2011 / 6550 प्रतियाँ
दूसरा पुनर्मुद्रण जून 2013 / 3000 प्रतियाँ
इस किताब की कविताओं का गैर-व्यावसायिक शैक्षणिक उद्देश्य से इसी या इसके समान कॉपीलेफ्ट चिन्ह के तहत उपयोग किया जा सकता है। स्रोत के रूप में किताब का उल्लेख अवश्य करें तथा एकलव्य को सूचित करें। किसी भी अन्य प्रकार के उपयोग के लिए एकलव्य तथा रचनाकारों से सम्पर्क करें।
© चित्रः तापोसी घोषाल/सितम्बर 2009

पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित
कागज़ः 100 gsm मेपलिथो और 220 gsm पेपर बोर्ड (कवर)
ISBN: 978-81-89976-58-3
मूल्यः ₹ 28.00

प्रकाशकः एकलव्य
ई-10, बीडीए कॉलोनी शंकर नगर,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोनः (0755) 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रकः आर. के. सिक्युप्रिंट प्रा. लि., भोपाल, फोनः (0755) 268 7589

1. केरल के केले
2. फूलों वाली बेल
3. नाव लहर में
4. चिड़िया आई पानी पीने
5. रेल चल रही
6. तितली उड़ती आई
7. पत्ती हिलती धूप निकलती
8. काली कोयल
9. उछली गेंद
10. कठपुतली
11. फूल खिले हैं
12. हवा

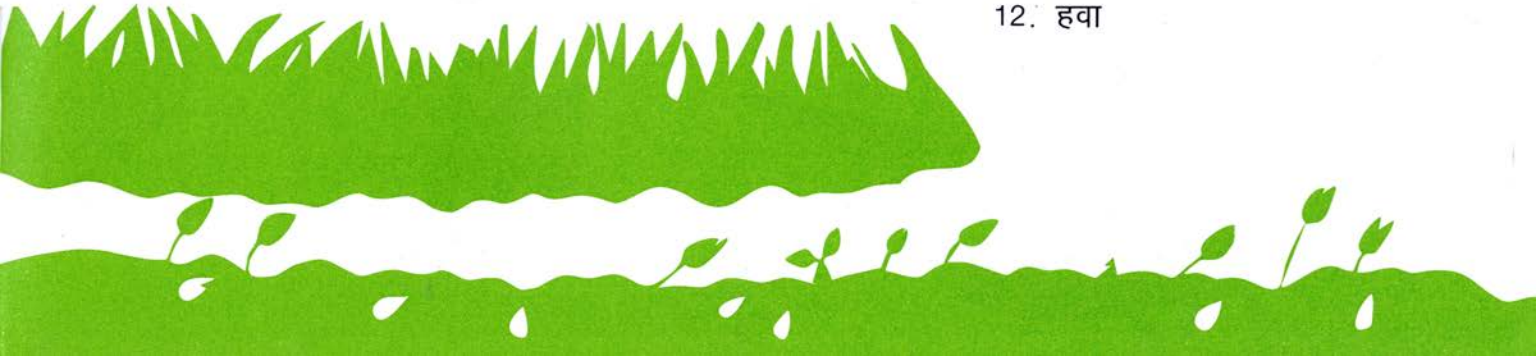

केरल के केले

केरल के केले
केरल का पानी
केरल की नावें
लम्बी पुरानी

केरल के हाथी
केरल के चावल
केरल की नदियाँ
केरल के बादल
है इनकी लम्बी
लम्बी कहानी

केरल के केले
केरल का पानी।

फूलों वाली बेल

ऊपर ऊपर
चली गई यह
फूलों वाली बेल!
हरे भरे पत्तों पर देखो
धूप-छाँव का खेल!

उड़ती आती तितली इस पर
हवा दौड़कर आती,
पत्ती पत्ती को छू छूकर
छू मन्तर हो जाती।

हवा-धूप-तितली-फूलों का
चलता रहता खेल।
ऊपर ऊपर चली गई यह
फूलों वाली बेल!

नाव लहर में

नाव लहर में मचल रही है
धीरे-धीरे उछल रही है
कभी बड़ी तेज़ी से बढ़ती
कभी-कभी वह सम्हल रही है।

चलती जाती दूर-दूर तक
बहती जाती दूर-दूर तक
नाव हमें है सुन्दर लगती
कहीं सैर को निकल रही है।

जाएगी वह खूब दूर तक
अपना रस्ता बदल रही है।

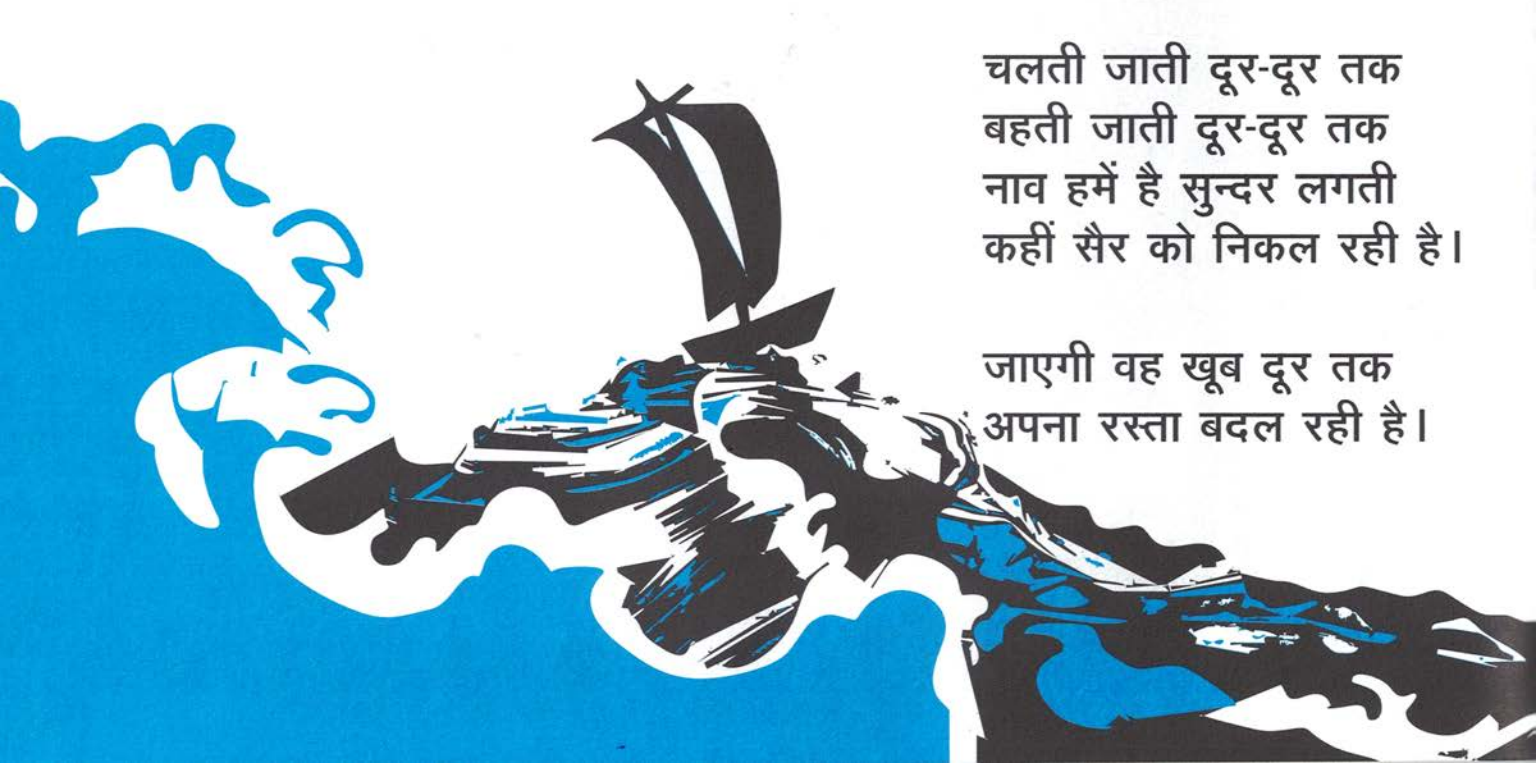

चिड़िया आई पानी पीने

सूरज चम चम
चमक रहा है
आसमान में
दमक रहा है।

धरती पर वह धूप बिछाकर
देखो कैसा बमक रहा है।

प्यासी फिरती चिड़िया रानी
उसे चाहिए ठण्डा पानी।
लाओ ना मिट्टी की थाली
भर दो उसको गुड़िया रानी।
गर्मी के ये गर्म महीने
चिड़िया आई पानी पीने।

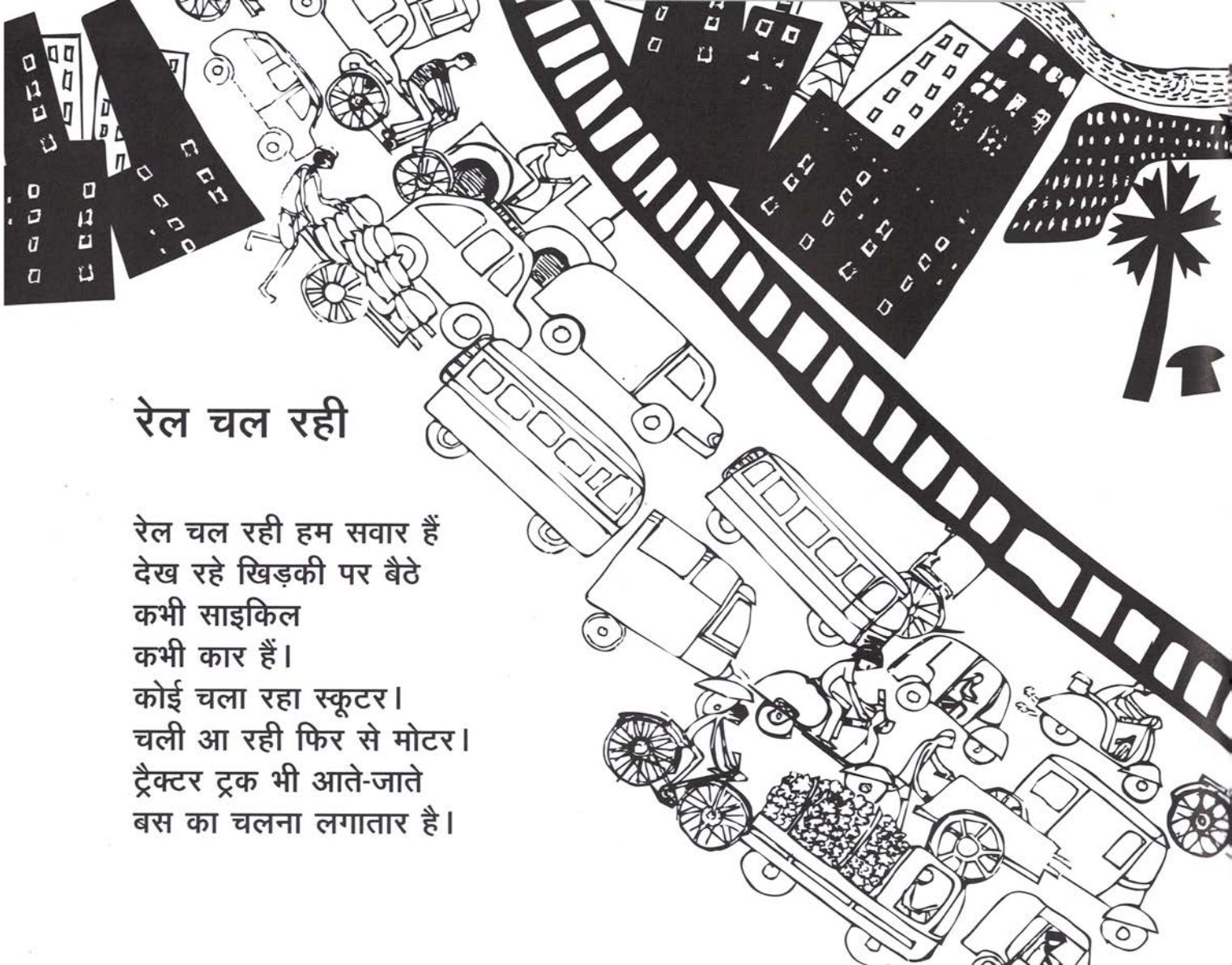

रेल चल रही

रेल चल रही हम सवार हैं
देख रहे खिड़की पर बैठे
कभी साइकिल
कभी कार हैं।
कोई चला रहा स्कूटर।
चली आ रही फिर से मोटर।
ट्रैक्टर ट्रक भी आते-जाते
बस का चलना लगातार है।

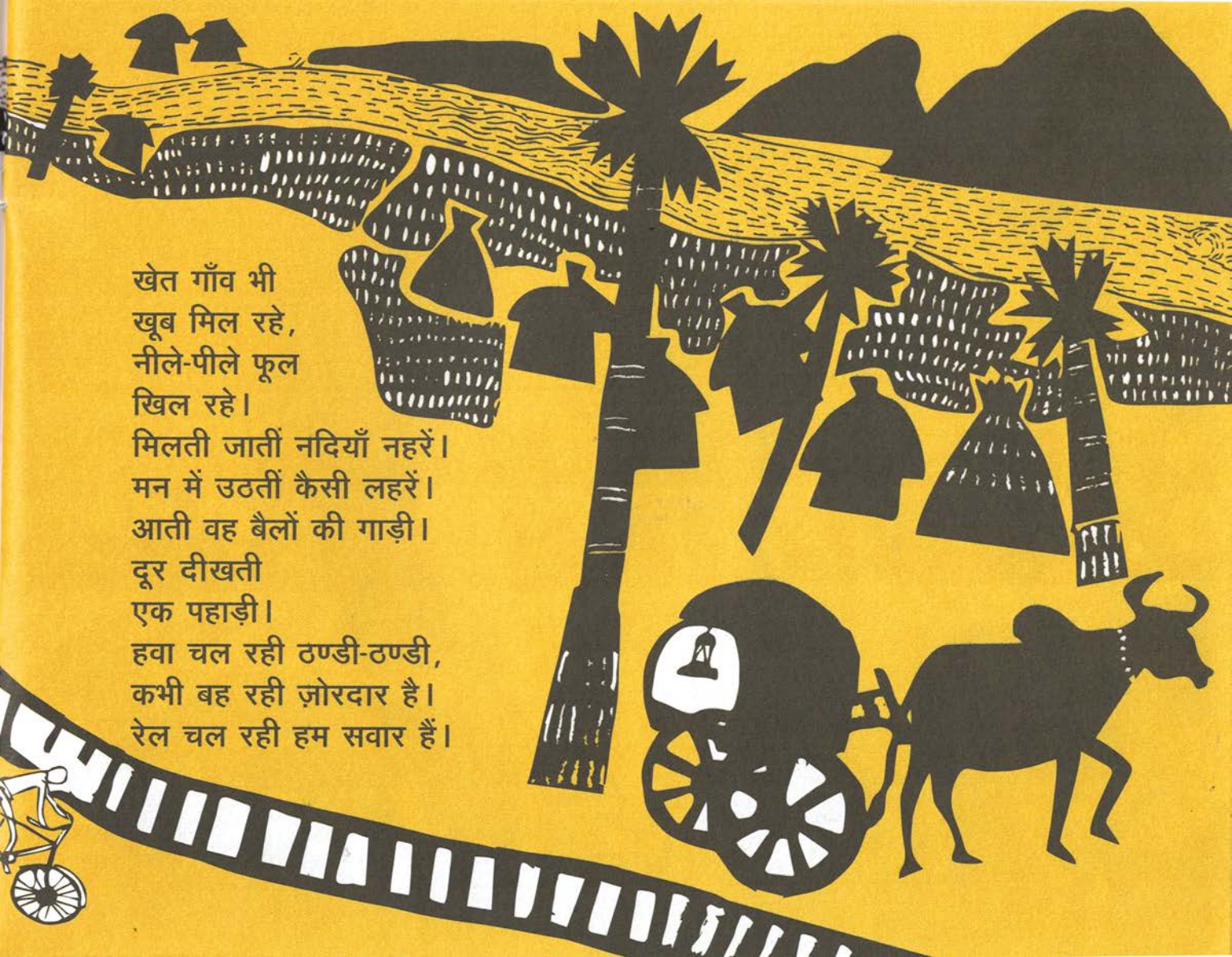

खेत गाँव भी
खूब मिल रहे,
नीले-पीले फूल
खिल रहे।
मिलती जातीं नदियाँ नहरें।
मन में उठतीं कैसी लहरें।
आती वह बैलों की गाड़ी।
दूर दीखती
एक पहाड़ी।
हवा चल रही ठण्डी-ठण्डी,
कभी बह रही ज़ोरदार है।
रेल चल रही हम सवार हैं।

तितली उड़ती आई

धूप खिली है
हवा चली है
तितली उड़ती आई –
रंग-रंग के फूल देखकर
वह उन पर मँडराई!
फूलों में जा छिपी
कहीं वह,
पड़ी नहीं दिखलाई!

पर, थोड़ी ही
देर बाद वह –
फिर से उड़ती आई!

फिर जा बैठी वह
फूलों पर
फिर उन पर मँडराई!

पत्ती हिलती धूप निकलती

पत्ती हिलती
धूप निकलती
तितली उड़ती आती।

सुबह हुई है
सूरज चमका
चिड़िया उड़ती गाती।

फूल खिले हैं
डाली डाली
धूप उन्हें चमकाती!

फूल-फूल पर
हवा उतरती
खुद भी फूली जाती।

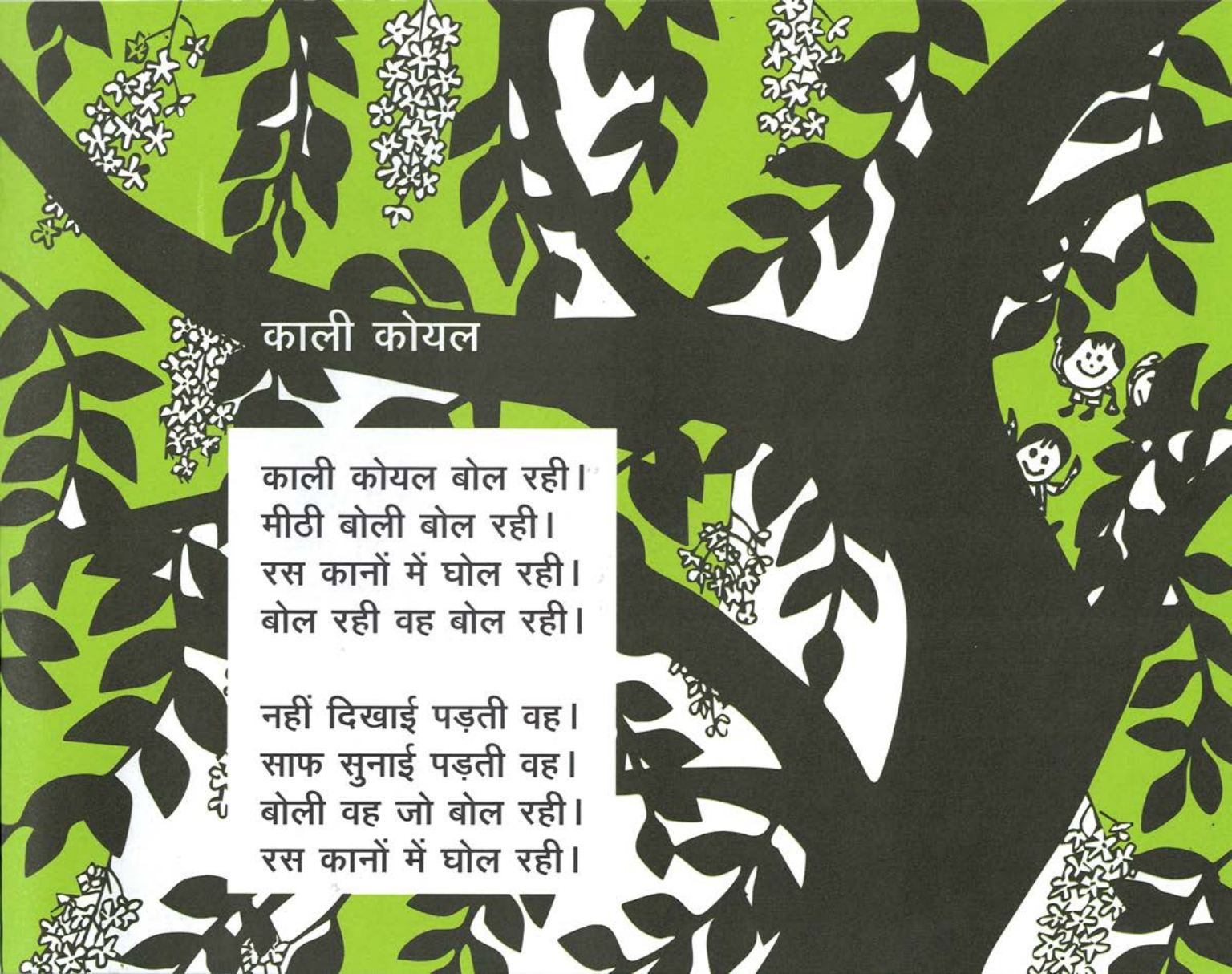

काली कोयल

काली कोयल बोल रही।
मीठी बोली बोल रही।
रस कानों में घोल रही।
बोल रही वह बोल रही।

नहीं दिखाई पड़ती वह।
साफ सुनाई पड़ती वह।
बोली वह जो बोल रही।
रस कानों में घोल रही।

उछली गेंद

उछली गेंद
उछाली है।
कुछ नीली
कुछ काली है।

दूर-दूर तक
जाती है,
हमको भी दौड़ाती है।
कितने खेल दिखाती है।
ऊपर-ऊपर जाती है।

लौट हाथ में आती है
कितने टप्पे खाती है।
कभी-कभी खो जाती है।
झाड़ी की हो जाती है।

कठपुतली

कठपुतली अब नाच दिखा दे
कुछ अपनी आँखें चमका दे।
खेल दिखा के तरह-तरह के
सिर को अब अपने
झटका दे।

कभी इधर को कभी उधर को
अपने हाथों को फैला दे।
मोड़ ज़रा-सी गरदन अपनी
माथे को थोड़ा
खुजला दे।
कठपुतली अब नाच दिखा दे।

फूल खिले हैं

फूल खिले हैं
डाली डाली!
हम भी तो बन जाएँ माली।

पौधे रोपें
पेड़ उगाएँ।
पानी दें,
कुछ खाद मिलाएँ!

क्यारी क्यारी
कलियाँ झूमें।
सूरज की किरणें
जब घूमें!

उन पर ठहरें,
हमको भाएँ!
उड़ती आए तितली काली।
हम भी तो बन जाएँ माली।

हवा

हवा झूमती आती है
झूला हमें झुलाती है।
हाथों की छतरी तक तो
कहीं छीन ले जाती है।

डाली-डाली पर जाकर
पत्ते खूब हिलाती है।
कपड़े हों या हो झण्डी
सबको लहरा जाती है।

धूम मचाकर पेड़ों पर
फल टप-टप टपकाती है।
हँसती है वह गाती है
हवा झूमती आती है।

इस पेज पर तुम अपनी कविता लिखो...

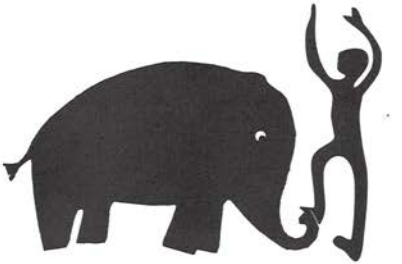

प्रयाग शुक्ल

कवि और कला समीक्षक। देश-विदेश की यात्राएँ करना इन्हें अच्छा लगता है। अपनी यात्राओं के बारे में भी लिखते हैं। बच्चों के लिए बहुत-सी कविताएँ लिखी है। कई संग्रह प्रकाशित हैं। यह सबसे नया है।

तापोसी घोषाल

कॉलेज ऑफ आर्ट, नई दिल्ली से 1989 में स्नातक। पिछले 18 वर्षों से स्वतंत्र इलेस्ट्रेटर व डिज़ाइनर हैं। इस दौरान इन्होंने कई महत्वपूर्ण प्रकाशकों एवं स्वैच्छिक संस्थाओं के लिए काम किया है। इनकी कृतियों का प्रदर्शन भारत समेत कई देशों में हुआ है। इनके द्वारा चित्रित *पन्ना* नाम की पुस्तक 2008 में आई.बी.बी.वाइ. ऑनर लिस्ट के लिए चुनी गई।

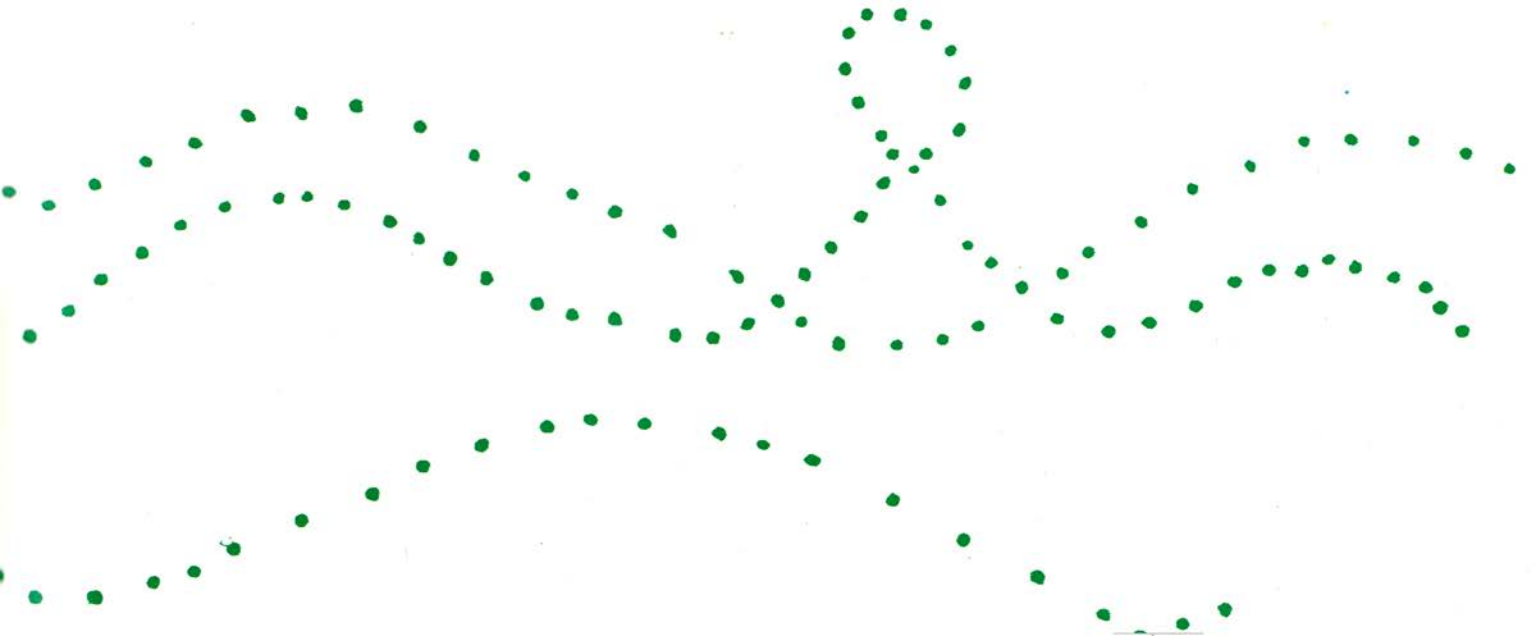

ISBN: 978-81-89976-58-3

9 788189 976583

एकलव्य

मूल्यः ₹ 28.00

A0108H

SRTT के वित्तीय सहयोग से विकसित